CHAPTER 52

SANSKRIT

Doctoral Theses

413. ओझा (लक्ष्मी कान्त)

पार्थचरितामृतम् का साहित्यशास्त्रीय एवं दार्शनिक विश्लेषण ।

निर्देशिका : डॉ. शारदा शर्मा

Th 16509

सारांश

कवि के व्यक्तितव को रखते हुए इसे क्रमशः बिन्दुवार वंश परमपरा, शिक्षा, परिवेश विद्वत्ता तथा क्रियाकलाप के विषय में बताया है । साहित्य शास्त्रीय सौंन्दर्य के आधार पर इसमें रस, अलंकार, ध्वनि, भाषा व अभिव्यंजना शैली से युक्त छन्दयोजना की विवेचना की गई है । दार्शनिक क्रम में निम्बार्क समप्रदाय में वर्णित जीव, ब्रह्म, जगत्, कर्म, मोक्ष के स्वरूप को महाकाव्य में दिये हुए मत के आधार पर उद्घाटित करने का पूर्ण प्रयास किया गया है ।

विषय सूची

1. कवि का व्यक्तित्व 2. साहितयसृजन 3. महाकाव्य की परम्परा तथा स्वरूप विवेचन एवं पार्थचरितामृतम् का महाकाव्यत्व 4. पार्थचरितामृतम् महाकाव्य की वस्तु योजना का कलातमक सौन्दर्य 5. पार्थचरितामृतम् में पात्र योजना एवं चरित्र-चित्रण 6. पार्थचरितामृतम् में साहित्य शास्त्रीय सौन्दर्य 7. पार्थचरितामृतम् का दार्शनिक विश्लेषण 8. उसंहार । संदर्भ ग्रंथ सूची ।

414. चरण सिंह

वैदिक साहित्य में विविध लोकों की अवधारणा ।

निर्देशक : डॉ. शशि तिवारी

Th 16508

सारांश

सुकर्मी जन यज्ञ कार्य करते हुए समस्त जीव-जन्तु, औषघ वनस्पति आदि का कल्याण करते हैं वे स्वर्गलोक में जाते हैं । दुष्कर्मी, नीच कर्म करके सृष्टि के विनाश का प्रयत्न करते हैं ईश्वर की आज्ञाओं का उल्लंघन करते हैं वे नर नरकगामी होते हैं । मृत्यु के उपरान्त मनुष्य की आत्मा के आगे जाने के मार्ग दो तरह के हैं-1श्रेय मार्ग, 2 प्रेय मार्ग । श्रेय मार्ग ऊर्ध्वगति वाला है तथा प्रेय मार्ग अधोगति वाला है। इस प्रकार उत्तम कर्मी ऊपर को जाता है, जिसका वेदों में स्पष्ट वर्णन अनेक स्थानों पर उपलब्ध है । इस शोध प्रबंध में वेदों में प्राप्त लोकों की अवधारणा का विवेचन किया गया है ।

विषय सूची

1. वैदिक वाड्मय और लोक एक परिचय 2. ऋग्वेद में लोकों की अवधारणा 3. यजुर्वेद में लोकों की अवधारणा 4. सामवेद में लोकों की अवधारणा 5. अथर्ववेद में लोकों की अवधारणा 6. ब्राह्मणों एवं आरण्यकों में लोकों की अवधारणा 7. प्रमुख उपनिषदों में लोक की अवधारणा 8. उसंहार । संदर्भ ग्रंथ सूची ।

415. द्विवेदी (तरुण कुमार)
हरिभद्रसूरिकृत 'षड्दर्शनसमुच्चय' के मूलाधार ।
निर्देशिका : डॉ. शकुन्तला पुंजानी
Th 16506

सारांश

शोध प्रबंध द्वारा 'षड्दर्शनसमुच्चय' के मूल आधार विषयक अवधारणा का स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है । साथ ही पारस्परिक सादृश्य-वैसादृश्य को प्रस्तुत करते हुए चार्वाकदर्शनसहित छहों दर्शन दृष्टियों की यथार्थ मान्यता को भी समुद्घाटित करने का प्रयत्न किया गया है । कोई भी व्यक्ति किसी भी शास्त्र का सांगोपांग वर्णन नही कर सकता है, 'नैको मुनिर्यस्य मतः प्रमाणम्' - इस सत्यता को अंगीकार करते हुए इस दुस्तर महार्णव को उडुप से पार करने का प्रयास है ।

विषय सूची

1. आचार्य हरिभद्र -जीवनवृत्त एवं कृतित्त्व 2. तत्त्वमीमांसा 3. प्रमाणमीमांसा 4. जीव 5. ईश्वर 6. मोक्ष 7. उसंहार । संदर्भ ग्रंथ सूची ।

416. धीर (अपर्णा)

शतपथ एवं तैत्तिरीय ब्राह्मण में प्रतिपादित ज्योतिष के तत्त्व ।

निर्देशक : डॉ. शशि तिवारी एवं डॉ. प्रेम कुमार शर्मा

Th 16521

सारांश

शोध प्रबंध में ज्योतिष-तत्त्वों के अन्वेषण के लिए स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती द्वारा सम्पादित एवं तीन भागों में दिल्ली से प्रकाशित शतपथ ब्राह्मण के संस्कारण तथा प्रोफेसर पुष्पेन्द्र कुमार द्वारा सम्पादित एवं तीन भागों में दिल्ली से ही प्रकाशित तैत्तिरीय ब्राह्मण के संस्करण को आधारग्रंथ के रूप में ग्रहण किया गया है । ज्योतिषशास्त्र सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र आदि जयोतिर्वान् पिण्डों के ज्ञान द्वारा जीवन के समस्त सतयों को प्रकाशित करता है, जैसे-जैसे मैं शोध-विषय के अध्ययन में अग्रसर होती रही, वैसे-वैस इन विशालकाय ब्राह्मणों में ज्योतिष-तत्त्व स्वतः प्रकाशित होते गए । इस प्रकार इन यजुर्वेदीय ब्राह्मणों में मुख्य रूप से प्रतिपादित हुए ज्योतिष के बीस तत्त्व प्राप्त हुए ।

विषय सूची

1. वैदिक वाङ्मय : एक परिचय 2. यजुर्वेदीय ब्राह्मण ग्रंथ : एक परिचय 3. ज्योतिष : एक परिचय 4. शतपथ एवं तैत्तिरीय ब्राह्मण में संवतसर-विचार 5. शतपथ एवं तैत्तिरीय ब्राह्मण में ऋतु-विचार 6. शतपथ एवं तैत्तिरीय ब्राह्मण में मास-विचार 7. शतपथ एवं तैत्तिरीय ब्राह्मण में पक्ष-विचार एवं तिथि-विचार 8. शतपथ एवं तैत्तिरीय ब्राह्मण में नक्षत्र-विचार 9. शतपथ एवं तैत्तिरीय ब्राह्मण में में मुहुर्त-विचार 10. शतपथ एवं तैत्तिरीय ब्राह्मण में में सूर्य-विचार 11. शतपथ एवं तैत्तिरीय ब्राह्मण में में चन्द्र-विचार 12. शतपथ एवं तैत्तिरीय ब्राह्मण में दिशा-विचार 13. शतपथ एवं तैत्तिरीय ब्राह्मण में प्राप्त अन्य जयोतिष-तत्त्व 14. उसंहार । परिशिष्ट एवं संदर्भ ग्रंथ सूची ।

417. मृत्युंजय कुमार

वैयाकरणभूषणसार की हरिवल्लभकृत दर्पणटीका का समीक्षात्मक अध्ययन।

निर्देशक : डॉ. श्रीवत्स शास्त्री

Th 16520

सारांश

वैयाकरणभूषणसार में प्रतिपादित भाषाशास्त्रीय सिद्धान्तों के मम्र के यथापूर्ण अवगम के उद्देश्य से इस ग्रंथ पर श्रीहरिवल्लभ द्वारा लिखित दर्पण नामक टीका की विस्तृत समीक्षा उपस्थापित की गई है । साथ ही वैयाकरणभूषणसार की व्याख्या करते हुए श्रीहरिवल्लभ ने विभिन्न दार्शनिक समप्रदायों द्वारा स्वीकृत भाषा दर्शन विषयक सिद्धांतों का जिस रूप में और जिन शब्दावलियों में चित्रण ओर प्रत्याख्यान प्रस्तुत किया है, उन पर एक विश्लेषणात्मक दृष्टि डाली गई है । विशेषरूप से नैयायिकों ओर मीमांसकों के भाषा सिद्धांतों की आलोचना के लिए हरिवल्लभ ने जो तर्क प्रस्तुत किये हैं या कौण्डभट्ट के तद्विषयक तर्कों का जिन शब्दों में स्पष्टीकरण किया हे उन पर एक विवेचनात्मक मीमांसा प्रस्तुत की गई है । इस शोधप्रबन्ध में दर्पणकार श्रीहरिवल्लभ द्वारा मौलिक रूप से उठाये गये व्याकरण दर्शन संबंधी विभिन्न पक्षों, अवधारणाओं और उन पर उनकी विशिष्ट मान्यताओं को सरल, सुगम और सुबोध भाषा में अभिव्यक्त करने का प्रयास किया गया है ।

विषय सूची

1. भूमिका 2. धातु के अर्थनिर्णय की समस्या 3. नामपद और सुप् के अर्थनिर्णय की समस्या 4. समास का स्वरूप 5 शक्तिः एक संक्षिप्त परिचय 6. व्याकरणिक विश्लेषण के कौण्डभट्ट विवेचित अन्य विषय 7. व्याकरणदर्शन में स्फोट की अवधारणा का इतिहास 8. हरिवल्लभकृत दर्पण अन्य टीकाओं के परिप्रेक्ष्य में 9. उसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची ।

418. मालवीय (राजश्री)

संस्कृतव्याकरणपरम्परा में 'सारस्वतव्याकरण' का योगदान ।

निर्देशक : डॉ. अंजू सेठ

Th 16522

सारांश

सारस्वतकार ने अपने समय की मांग के अनुकूल एक सरल, स्पष्ट एवं संक्षिप्त व्याकरण की रचना कर संस्कृत व्याकरण शास्त्र को अमूल्य-निधि प्रदान की जो कि अत्यन्त सराहनीय कार्य है । अतः संस्कृत व्याकरण परम्परा में सारस्वतव्याकरण का योगदान अमूल्य है क्योंकि सारस्वतव्याकरण का उद्देश्य लोगों को व्याकरणशास्त्र का पांडित्य प्रदान करना नहीं था परन्तु प्रारम्भिक अध्येताओं को सामान्य ज्ञान प्रदान करना था ।

विषय सूची

1.सारस्वतव्याकरण शास्त्र की ऐतिहासिक पुष्ठभूमि 2. सारस्वतकार अनुभूतिस्वरूपखचार्य का व्यक्तित्व तथा कृतित्व 3. सारस्वतव्याकरण का प्रतिपाद्य-विषय, व्याकरणशैली तथा पद्धति 4. सारस्वतव्याकरण, पाणिनिव्याकरण, पाणिनिइतरव्याकरणः तुलनात्मक विश्लेषण 5. सारस्वतव्याकरणकार का व्याकरण परमपरा में योगदान 6. उसंहार । संदर्भ ग्रंथ सूची ।

419. मिश्र (अनीश)

काव्यप्रकाश की टीकाओं में विस्तारिका टीका का स्थान ।

निर्देशक : डॉ. प्रदीप्त कुमार पण्डा

Th 16507

सारांश

शोध प्रबंध में विस्तारिका टीका के परिप्रेक्ष्य का काव्यप्रकाश का विश्लेषणात्मक तथा समालोचनात्मक अध्ययन किया गया हे अतएव निशिचित रूप से इस ग्रंथ का शोध कार्य काव्यप्रकाश के गम्भीर मर्मों को प्रकाशित करेगा तथा उसकी दुर्बोधता को दूर कर उसका निराकरण प्रस्तुत करेगा ।

विषय सूची

1. काव्यप्रकाश तथा उसकी टीकाएं 2.परमानन्द चक्रवर्ती तथा विस्तारिका टीका 3. काव्यविवेचन 4. शब्दशक्ति विवेचन 5. ध्वनि और गुणीभूत व्यंग्य 6. रस विवेचन 7. गुण विवेचन 8. दोष विवेचन 9. अलंकार विवेचन 10. विस्तारिका

टीका की उपजीव्यता एवं उत्तरवर्तियों पर प्रभाव 11. निष्कर्ष । संदर्भ ग्रंथ सूची ।

420. मिश्र (सुबोध कुमार)

कुमारसम्भवम् का भाषावैज्ञानिक अध्ययन ।

निर्देशिका : डॉ. ए. सुधा देवी

Th 16504

सारांश

महाकवि कालिदास का जिवनवृत्त, महाकवि कालिदास की कृतियां, कालिदास के काव्यों में कुमारसम्भवम् का स्थान, कुमारसम्भवम् महाकाव्य की विषयवस्तु, महाकाव्य के लक्षणों के आधार पर कुमारसम्भवम् की समीक्षा एवं कुमारसम्भवम् में महाकाव्य लक्षण समन्वय का विवेचन किया गया है । ध्वनि विज्ञान की उपयोगिता, ध्वनि समूह, ध्वनि गण, ध्वनि का प्रभाव, बलाघात, ध्वनि परिवर्तन के कारण पर चर्चा की गई है । अर्थविज्ञान शब्द का प्रयोग, अर्थविज्ञान का परिचय एवं महत्व, अथस्वरूप, अर्थ का लक्षण एवं अध्येय शब्दों का वर्गीकरण करते हुए उपलब्ध संज्ञा और विशेषण शब्दों में - देव, अध्यातम, ऋशि-व्यक्ति का नाम वर्गीय एवं भाव सादृश्यवाची शब्दों के अर्थी परिवर्तनों का विवेचन किया गया है ।

विषय सूची

1. भाषा एवं भाषा विज्ञान अध्ययन के क्षेत्र 2. महाकवि कालिदास की कृतियां एवं कुमारसम्भवम् 3. कुमारसम्भवम् का ध्वनि-वैज्ञानिक अध्ययन 4. कुमारसम्भवम् का रूप-वैज्ञानिक अध्ययन 5. कुमारसम्भवम् का वाक्य-वैज्ञानिक अध्ययन 6. कुमारसम्भवम् का अर्थ-वैज्ञानिक अध्ययन 7. उसंहार । संदर्भ ग्रंथ सूची ।

421. विनोद कुमार

स्वातन्त्र्योत्तर संस्कृत नाटकों में अपाणिनीय प्रयोग ।

निर्देशक : डॉ. श्रीवत्स शास्त्री

Th 16519

सारांश

स्वातन्त्र्योत्तर सभी नाटकों का संग्रह कर उनके विषय में सामान्य जानकारी प्रस्तुत

करता है । आधुनिक नाटककारों द्वारा अपने ग्रंथों में प्रयुक्त अपाणिनीय प्रयोगों का अध्ययन किया है । क्योंकि पाणिनि से पूर्व अपाणिनीय प्रयोगों का दिखाना आश्चर्य नहीं है अतः व्याकरण भाषा का निर्माण नहीं करता अपितु प्रचलित शब्दों एवं अपशब्दों का विवेचनमात्र प्रस्तुत करता है । आचार्य पाणिनि द्वारा लौकिक संस्कृत को नियमबद्ध किये जाने क बाद भी उस पर न चलने के सवभाविक एवं अस्वाभाविक कारणों का अध्ययन करने से संस्कृत शब्दों का भाषावैज्ञानिक दृष्टि से विश्लेषण किया है ।

विषय सूची

1. स्वातन्त्र्योत्तर लिखित प्रमुख संस्कृत नाटकों का परिचय 2. सन्धि, समास, कारक, एवं विभक्ति संबंधी अपाणिनीय प्रयोग 3. लिंग एवं तद्धित सम्बन्धी अपाणिनीय प्रयोग 4. कृदन्तविषयक अपाणिनीय प्रयोग 5. तिङन्त विषयक अपाणिनीय प्रयोग 6. उसंहार । संदर्भ ग्रंथ सूची ।

422. शुक्ल (रामकृष्ण)

मध्यप्रदेश (छठीं से बारहवीं शताब्दी तक) के संस्कृत अभिलेखों का सांस्कृतिक अध्ययन।

निर्देशिका : डॉ. सन्तोष गुप्ता

Th 16503

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन में मध्यप्रदेश की 600 वर्षों की लगभाग 351 अभिलेखीय सामग्री को व्यवस्थित कर पूर्वमध्यकालीन मध्यप्रदेश की सांस्कृतिक व्यवस्था के विविध आयामों को यथासंभव समग्रता के आलोक में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। कालावधि के अभिलेखों का सामान्य परिचय, विषयवस्तु एवं प्राप्ति स्थल आधारभूत सामग्री के आधार पर अभिलेखों का वर्गीकरण, लेखन सामग्री, अभिलेखीय विषयवस्तु को लिखने के सर्वमान्य सिद्धांत, अभिलेखों की भाषा, लिपि एवं प्रयुक्त संवत् इन बिन्दुओं का अध्ययन किया गया है। कालावधि में मध्यप्रदेश में शासन कर रहे 18 राजवंशों के राजनैतिक इतिहास का अभिलेखीय दर्पण में अध्ययन व विवेचन किया गया है। तत्कालीन मध्यप्रदेश की प्रशासनिक, सामाजिक और आर्थिक परिस्थिति का अध्ययन किया गया है ।

विषय सूची

1. मध्यप्रदेश के अभिलेख : सर्वेक्षण एवं समीक्षा 2. छठी से बारहवीं शताब्दी तक की कालावधि के मध्यप्रदेश का राजनैतिक परिदृश्य 3. राज्य प्रशासन तथा सामाजिक और आर्थिक परिस्थिति 4. धार्मिक परिस्थिति 5. शिक्षा एवं साहित्य और कला 6. सारांश एवं निष्कर्ष । परिशिष्टयां एवं संदर्भिका ।

423. सन्दीप कुमार

चन्देल-वंशीय संस्कृत अभिलेखों का अध्ययन ।

निर्देशिका : डॉ. शारदा शर्मा एवं उर्मिभूषण गुप्ता

Th 16505

सारांश

हरिहर विट्ठल त्रिवेदी कृत 'कार्पस् इन्सक्रिपशन्स इण्डिकेरम्' Vol.7, भाग-3 का अध्ययन किया । शोध प्रबंध के अन्तर्गत अभिलेखीय सामग्री के आधार पर चन्देल वंश के इतिहास व राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, साहित्यिक तथा वास्तुकला एवं मूर्तिकला को उद्घाटित करने का प्रयास किया गया है ।

विषय सूची

1. विषय-प्रवेश 2. चन्देल-वंशीय राजनैतिक इतिहास व उसकी शासन व्यवस्था 3.चन्देल-वंशीय अभिलेखों का सर्वेक्षण 4.चन्देल-वंशीय सामाजिक व आर्थिक व्यवस्था 5. चन्देल-वंशीय धार्मिक व्यवस्था 6. चन्देल-वंशीय मूर्तिकला एवं वास्तुकला 7. चन्देल-वंशीय अभिलेखों का साहित्यिक अध्ययन 8. उसंहार । परिशिष्ट एवं संदर्भ ग्रंथ सूची ।

424. सिंह (उमेश कुमार)

आयुर्वेद के आचार्यत्रयी पर वैदिक चिकित्सापरक मन्त्रों का प्रभाव ।

निर्देशिका : डॉ. शशि तिवारी एवं डॉ. विष्णुनिरंजन सिन्हा

Th 16502

सारांश

आयुर्वेद की संहिताओं, उसके निघण्टुओं अष्टांग आयुर्वेद तथा उसकी शाखाओं का संक्षिप्त परिचय दिया गया है । इतिहास एवं पुराणों में प्राप्त आयुवैदिक सामग्री का विश्लेषण किया गया है । ऋग्वेद और यजुर्वेद में प्राप्त चिकित्सापरक मन्त्र प्रस्तुत किए गए हैं तथा साथ ही उनकी संक्षिप्त समीक्षा भी है । वैदिक संहिताओं में प्राप्त प्राकृतिक चिकितसा एवं उसके प्रकारों पर प्रकाश डाला गया है । आयुर्वेद में आठों अगं वेद के साथ किसी तरह संबद्ध हैं यह प्रदर्शित किया गया है ।

विषय सूची

1.आयुर्वेद-साहित्य : एक परिचय 2. वैदिक वाङ्मय : एक परिचय 3. आयुर्वेद के आचार्यत्रीय : एक परिचय 4. इतिहास एवं पुराणों में प्राप्त आयुर्वैदिक सामग्री 5. ऋग्वेद और यजुर्वेद के चिकितसापरक मन्त्र 6. अथर्ववेद के चिकित्सापरक मन्त्र एवं संहितेतर वैदिक वाङ्मय में चिकित्सापरक संदर्भ 7. चिकितसा एवं औषधि -विज्ञान 8. चिकित्सा से संबद्ध देव : ऋग्वेद से आयुर्वेद तक 9. आचार्यत्रयी के चिकित्सादर्शन पर वैदिक मन्त्रों का प्रभाव 10. वैदिक चिकित्सापरक मंत्रों में चर्चित प्रमुख औषधियों का आयुर्वेद के ग्रंथों में अनुप्रयोग 11.आचार्यत्रयी के अनुसार अष्टांग आयुर्वेद एवं उसके स्रोतरूप वैदिक मंत्र 12. उसंहार । संदर्भ ग्रंथ सूची ।

M.Phil Dissertations

425. अरूण कुमार

शाकटायन व्याकरण और सिद्धान्तकौमुदी के कृत् प्रकरण का तुलनात्मक अध्ययन ।

निर्देशक : डॉ. पतंजलि कुमार भाटिया

426. आर्य (दयानन्द)

'तदेव गगनं सैव धरा' में श्रीनिवास रथ की चेतना ।

निर्देशक : डॉ. गिरीश चन्द्र पंत

427. करूणेश चन्द्र कंचन

गुप्तोत्तर कालीन बंगाल, बिहार एवं असम के संस्कृत अभिलेखों का भाषिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन (6ठी से 10वी शताब्दी) ।

निर्देशिका : डॉ. सविता निगम

428. कुमारी विजयेता

डॉ. रामकरण शर्मा कृत 'करूणा' का समीक्षात्मक अध्ययन ।

निर्देशिका : प्रो. शारदा शर्मा

429. गर्ग (कुमुद रानी)

''श्रीभार्गवराघवीयम्'' महाकाव्य के प्रथम दो सर्गों का साहित्यिक परिचय।

निर्देशक : प्रो. मदनमोहन अग्रवाल

430. गोस्वामी (सुभाषिनी)

वर्धन, मौखरी एवं उत्तरगुप्त कालीन सामाजिक एवं धार्मिक व्यवस्था ।

निर्देशिका : डॉ. पूर्णिमा कौल

431. चौबे (बलवन्त)

श्री रूप गोस्वामी के नाटकचंद्रिका का समीक्षात्मक अध्ययन ।

निर्देशक : डॉ. राजेन्द्र कुमार

432. तरूण लता

याज्ञवल्क्यस्मृति में प्राप्त आधुनिक विधि तत्त्वों के मूल ।

निर्देशक : डॉ. रघुनाथ शर्मा

433. देशराज

रसगंगाधर में प्रतिपादित प्रतिभा का स्वरूप ।

निर्देशिका : प्रो. शारदा शर्मा

434. पिंकी

संहिता ग्रन्थों में पशु-पक्षियों का शुभाशुभत्व विचार ।

निर्देशिका : डॉ. पुनीता शर्मा

435. भारती (ज्योति)
ज्योतिष शास्त्र में बुध ग्रह का महत्व ।
निर्देशिका : डॉ. पुनीता शर्मा

436. मिश्रा (रीतू)
पारस्करगृह्यसूत्र की सामाजिक निष्ठा ।
निर्देशिका : प्रो. शारदा शर्मा

437. मौर्या (कुसुम)
वेदांग ज्योतिष में काल-विमर्श ।
निर्देशक : प्रो. देवेन्द्र मिश्र

438. रीना कुमारी
न्याय-साङ्ख्य-वेदान्त में वर्णित सृष्टि-प्रक्रिया का समीक्षात्मक अध्ययन ।
निर्देशिका : डॉ. उर्मिला रूस्तगी

439. श्री (ऋचा)
मौहूर्तिक योगविचार ।
निर्देशिका : डॉ. पुनीता शर्मा

440. वैशाली
मथुरा के संस्कृत अभिलेखों का आलोचनात्मक अध्ययन ।
निर्देशिका : डॉ. संतोष गुप्ता

441. शर्मा (नीलम)
टी. गणपति शास्त्री द्वारा सम्पादित 'सर्वमतसंग्रह' का अध्ययन ।
निर्देशक : प्रो. मदन मोहन अग्रवाल

442. शर्मा (सुरूचि)
द्वि - त्रयादि ग्रहों के सहचर्य से फलादेशों में विविधता ।
निर्देशक : डॉ. रघुनाथ शर्मा

443. श्रीवास्तव (चन्द्रप्रभा)
महाभाष्य की व्याख्यान-परम्परा में एकशेष सूत्रों का विवेचन ।
निर्देशक : डॉ. मिथिलेश चतुर्वेदी

444. सरिता कुमारी
महाभाष्यप्रदीप की टीकाओं का अध्ययन : विभक्त्याह्निक के सन्दर्भ में ।
निर्देशक : डॉ. मिथिलेश चतुर्वेदी

445. सीमा
ईशावास्योपनिषद् एवं श्रीमद्भगवद्गीता में वर्णित कर्म की अवधारणा ।
निर्देशिका : डॉ. वन्दिता अरोड़ा